रविवार 5 सितंबर, 2021

विषय **— आदमी**

स्वर्ण पाठ: **भजन संहिता 133 : 1**

"देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें*!*"

उत्तरदायी अध्ययन: **उत्पत्ति 1 : 26, 27**
इफिसियों 4 : 4-6

26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।
27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।
4 एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।
5 एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा।
6 और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपरऔर सब के मध्य में, और सब में है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. गलातियों 3 : 28

28 अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

2. यहेजकेल 1 : 1 (हुआ) (वह), 3 (पुजारी को) (तथा)

1 फिर यह हुआ ... स्वर्ग खुल गया, और मैं ने परमेश्वर के दर्शन पाए।
3 यहोवा का वचन यहेजकेल याजक के पास पहुचा; ... यहोवा की शक्ति उस पर वहीं प्रगट हुई।

3. यहेजकेल 2 : 2-4 (*से 1st* .)

2 जैसे ही उसने मुझ से यह कहा, त्योंही आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पांवों के बल खड़ा कर दिया; और
जो मुझ से बातें करता था मैं ने उसकी सुनी।
3 और उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, मैं तुझे इस्राएलियों के पास अर्थात बलवा करने वाली
जाति के पास भेजता हूँ, जिन्होंने मेरे विरुद्ध बलवा किया है; उनके पुरखा और वे भी आज के दिल तक
मेरा अपराध करते चले आए हैं।
4 इस पीढ़ी के लोग जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ, वे निर्लज्ज और हठीले हैं;

4. यहेजकेल 3 : 27

27 परन्तु जब जब मैं तुझ से बातें करूं, तब तब तेरे मुंह को खोलूंगा, और तू उन से ऐसा कहना, कि प्रभु
यहोवा यों कहता है, जो सुनता है वह सुन ले और जो नहीं सुनता वह न सुने, वे तो बलवई घराने के हैं ही।

5. यहेजकेल 11 : 16-20

16 परन्तु तू उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं ने तुम को दूर दूर की जातियों में बसाया और देश देश
में तितर-बितर कर दिया तो है, तौभी जिन देशों में तुम आए हुए हो, उन में मैं स्वयं तुम्हारे लिये थोड़े दिन
तक पवित्र स्थान ठहरूंगा।
17 इसलिये, उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, कि मैं तुम को जाति जाति के लोगों के बीच से बटोरूंगा,
और जिन देशों में तुम तितर-बितर किए गए हो, उन में से तुम को इकट्ठा करूंगा, और तुम्हें इस्राएल की
भूमि दूंगा।
18 और वे वहां पहुंच कर उस देश की सब घृणित मूरतें और सब घृणित काम भी उस में से दूर करेंगे।
19 और मैं उनका हृदय एक कर दूंगा; और उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा, और उनकी देह में से
पत्थर का सा हृदय निकाल कर उन्हें मांस का हृदय दूंगा,
20 जिस से वे मेरी विधियों पर नित चला करें और मेरे नियमों को मानें; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं
उनका परमेश्वर ठहरूंगा।

6. यूहन्ना 8 : 12 (*से* यीशु)

12 तब यीशु ने कहा...

7. यूहन्ना 10 : 30

30 मैं और पिता एक हैं।

8. यूहन्ना 15 : 1-17

1 सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है।

2 जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले।
3 तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो।
4 तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
5 मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।
6 यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं।
7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।
8 मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।
9 जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।
11 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।
12 मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।
13 इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।
14 जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो।
15 अब से मैं तुम्हें दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता है: परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।
16 तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे।
17 इन बातें की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूं, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।

9. इफिसियों 4 : 1-3, 13-16, 23, 24, 31, 32

1 सोमैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो।
2 अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो।
3 और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।
13 जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।
14 ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों।
15 वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं।

16 जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए॥

23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।

24 और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धामिर्कता, और पवित्रता में सृजा गया है॥

31 सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए।

32 और एक दूसरे पर कृपाल, और करूणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 502 : 29-5

लेकिन एक रचनाकार और एक रचना है। इस रचना में आध्यात्मिक विचारों और उनकी पहचानों का खुलासा होता है, जो अनंत मन में समाहित हैं और हमेशा के लिए परिलक्षित होते हैं। ये विचार अनंत से लेकर अनंत तक हैं, और उच्चतम विचार ईश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं।

2. 515 : 21 (पुरुष)-24

मनुष्य सभी विचारों का पारिवारिक नाम है, - ईश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ। परमेश्वर जो कुछ प्रदान करता है वह उसके अनुसार चलता है, अच्छाई और शक्ति को दर्शाता है।

3. 31 : 4-11

यीशु ने स्वीकार किया कि मांस का कोई संबंध नहीं है। उसने कहा: "पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।" फिर से उसने पूछा: "कौन है मेरी माता? और कौन है मेरे भाई?" यह समझकर कि यह वे हैं जो अपने पिता की इच्छा को पूरा करते हैं। हमारे पास पिता के नाम से किसी भी आदमी को बुलाने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। उन्होंने आत्मा, ईश्वर को एकमात्र निर्माता, और इसलिए सभी के पिता के रूप में मान्यता दी।

4. 26 : 10-14

मसीह आत्मा था जिसे यीशु ने अपने बयानों में निहित किया था: "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं;" "मैं और पिता एक हैं।" यह मसीह, या यीशु की दिव्यता, उसकी दिव्य प्रकृति थी, जो उसे अनुप्राणित करती थी।

5. 525 : 7-16

निम्नलिखित विभिन्न भाषाओं में मनुष्य शब्द के कुछ पर्यायवाची हैं। सैक्सन में, मानव जाति, एक महिला, कोई भी; वेल्श में, जो ऊपर उठता है, — प्राथमिक भाव छवि, रूप; हिब्रू में, छवि, समानता; आइसलैंडिक भाषा में, मन। निम्नलिखित अनुवाद आइसलैंडिक भाषा से है:—

और परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपनी बुद्धि और अपनी समानता के अनुसार बनाएं; और परमेश्वर ने मनुष्य को उसके मन के अनुसार बनाया; उसने उसे परमेश्वर के मन की तरह बनाया; और उसने उन्हें नर और मादा बनाया।

6. 524 : 17-27 (*से*,)

एक ही आदेश से, मन ने नर और मादा दोनों को पुरुष बनाया था। फिर कोई भौतिक संगठन मनुष्य का आधार कैसे बन सकता है? गैर-बुद्धिमान मन का माध्यम कैसे बन सकता है, और त्रुटि सत्य का प्रवर्तक कैसे हो सकती है? पदार्थ आत्मा का प्रतिबिम्ब नहीं है, फिर भी ईश्वर अपनी सारी सृष्टि में प्रतिबिम्बित है। उसकी रचना में यह जोड़ वास्तविक है या असत्य? क्या यह सत्य है, या यह मनुष्य और परमेश्वर के विषय में झूठ है?

यह झूठ होना चाहिए,

7. 191 : 4-17

जैसे ही नश्वर इस भ्रम को छोड़ देते हैं कि एक से अधिक मन हैं, एक से अधिक ईश्वर हैं, ईश्वर की समानता में मनुष्य प्रकट होगा, और यह शाश्वत मनुष्य उस समानता में कोई भौतिक तत्व शामिल नहीं करेगा।

एक सामग्री के रूप में, सैद्धांतिक जीवन-आधार को अस्तित्व की गलत धारणा के रूप में पाया जाता है, मनुष्य का आध्यात्मिक और दिव्य सिद्धांत मानव विचार पर आधारित होता है, और इसे "जहां युवा बच्चा था," की ओर ले जाता है - यहां तक कि एक नए जन्म के लिए भी पुराना विचार, जीवन के आध्यात्मिक बोध और जिसमें जीवन शामिल है। इस प्रकार पूरी पृथ्वी सत्य के प्रकाश के पंखों पर, त्रुटि के अंधेरे का पीछा करते हुए बदल जाएगी।

मानव विचार को स्वयं को भौतिकता और बंधन से मुक्त करना होगा।

8. 399: 3-10, 23-28 (*से 2nd*.)

आप कहते हैं कि कुछ भौतिक संयोग रोग उत्पन्न करते हैं; लेकिन अगर भौतिक शरीर रोग का कारण बनता है, तो क्या पदार्थ ठीक कर सकता है कि किस पदार्थ का कारण है? नश्वर मन दवा निर्धारित करता है, और उसे प्रशासित करता है। नश्वर मन व्यायाम की योजना बनाता है और शरीर को कुछ गतियों के माध्यम से रखता है। नश्वर विचार, उर्फ नश्वर मन की क्रिया के अलावा, कोई गैस्ट्रिक गैस जमा नहीं होती है, न ही कोई स्राव और न ही संयोजन काम कर सकता है।

वैज्ञानिक रूप से कहें तो ऐसा कोई नश्वर मन नहीं है जिससे भ्रम से उत्पन्न भौतिक विश्वासों को बनाया जा सके। यह गलत नाम वाला दिमाग कोई इकाई नहीं है। यह केवल सामग्री का झूठा अर्थ है क्योंकि सामग्री समझदार नहीं है। एक मन, भगवान, में कोई नश्वर राय नहीं है। जो कुछ भी वास्तविक है वह इस अमर मन में समाहित है।

9. 205 : 22-27

जब हमें पता चलता है कि एक मन है, तो अपने पड़ोसी को अपने जैसे प्यार करने का ईश्वरीय नियम सामने आता है; जबकि कई सत्तारूढ़ मन में एक विश्वास मनुष्य के मन, एक ईश्वर के प्रति सामान्य बहाव में बाधा डालता है, और मानव विचारों को विपरीत रास्तों पर ले जाता है जहां स्वार्थ राज करता है।

10. 112 : 16-21 (*से* मसीह-विचार)

ईसाई विज्ञान में अनंत से एक सिद्धांत और उसका अनंत विचार आता है, और इस अनंतता के साथ आध्यात्मिक नियम, कानून और उनका प्रदर्शन आता है, जो महान दाता की तरह, "कल, और आज, और हमेशा के लिए समान हैं; " इस प्रकार चिकित्सक के दिव्य सिद्धांत और मसीह-विचार हैं ...

11. 226 : 25-29

लंगड़े, बहरे, गूंगे, अंधे, बीमार, कामुक, पापी, मैं उनकी अपनी मान्यताओं की गुलामी से और फिरौन की शिक्षा प्रणालियों से बचाना चाहता था, जो आज, पहले की तरह, पकड़ रखते हैं बंधन में इसराइल के बच्चे।

12. 228 : 11-19

मनुष्य की दासता वैध नहीं है। जब मनुष्य अपनी स्वतंत्रता की विरासत में प्रवेश करेगा, तो उसका ईश्वर प्रदत्त भौतिक इंद्रियों पर आधिपत्य हो जाएगा। नश्वर किसी दिन सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर अपनी स्वतंत्रता का दावा करेंगे। तब वे दिव्य विज्ञान की समझ के माध्यम से अपने स्वयं के शरीर को नियंत्रित करेंगे। अपनी वर्तमान मान्यताओं को गिराते हुए, वे सद्भाव को आध्यात्मिक वास्तविकता के रूप में और भौतिक असत्य के रूप में कलह को पहचानेंगे।

13. 227 : 14-26

मनुष्य के अधिकारों को त्यागकर, हम सभी उत्पीड़न के विनाश को दूर करने में विफल नहीं हो सकते। गुलामी मनुष्य की वैध स्थिति नहीं है। ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र किया। पाल ने कहा, "मैं आज़ाद पैदा हुआ था।" सभी पुरुषों को स्वतंत्र होना चाहिए। "जहां कहीं प्रभु का आत्मा है, वहां स्वतंत्रता है।" प्रेम और सत्य मुक्त करते हैं, लेकिन बुराई और त्रुटि पुरुषों को कैद में ले जाती है।

क्रिश्चियन साइंस स्वतंत्रता और रोने के मानक को बढ़ाता है: "मेरे पीछे आओ! बीमारी, पाप, और मृत्यु के बंधन से बचो! ” यीशु ने रास्ता चिह्नित किया। दुनिया के नागरिक, "परमेश्वर के बच्चों की शानदार स्वतंत्रता" स्वीकार करें और मुक्त रहें! यह तुम्हारा दिव्य अधिकार है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के

लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6